आचार्य वादिराजसूरि

जीवन-परिचय : आचार्य वादिराजसूरि दार्शनिक, चिन्तक और महाकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये उच्चकोटि के तार्किक होने के साथ महाकाव्य के प्रणेता भी हैं। इनकी तुलना जैन कवियों में सोमदेवसूरि से और संस्कृत-कवियों में नैषधकार श्रीहर्ष से की जा सकती है।

आचार्य वादिराजसूरि द्रमिल या द्रविड़ संघ के आचार्य थे। इसमें भी एक संघ नन्दिसंघ था, जिसकी अंरुगल शाखा के आप आचार्य थे। अंरुगल किसी स्थान या ग्राम का नाम है, उसकी मुनिपरम्परा अंरुगलान्वय नाम से प्रसिद्ध हुई थी।

आचार्य वादिराजसूरि श्रीपालदेव के प्रशिष्य और मतिसागर के शिष्य थे। वादिराज उनका मूल नाम नहीं है किन्तु एक पदवी है। सम्भवत: अधिक प्रचलित होने के कारण ही वे इस नाम से प्रसिद्ध हो गये।

चालुक्य नरेश जयसिंह देव की सभा में इनका बड़ा सम्मान था और इनकी गणना प्रख्यात वादियों में की जाती थी। मल्लिषेण-प्रशस्ति के अनुसार ये राजा जयसिंह द्वारा पूजित थे। इन्हें महान वादी-विजेता और कवि माना जाता है।

आचार्य वादिराजसूरि, षट्तर्कषण्मुख, स्याद्वादविद्यापति और जगदेकमल्ल आदि उपाधियाँ हैं।

आचार्य वादिराजसूरि ने अपने ग्रन्थों की प्रशस्तियों में रचना-काल का निर्देश किया है। उन्होंने अपना ग्रन्थ पार्श्वनाथचरित 'सिंहचक्रेश्वर' या 'चालुक्य-चक्रवर्ती' जयसिंह की राजधानी में निवास करते हुए शक संवत् 947 (ई. सन् 1025) कार्तिक शुक्ल तृतीया को पूर्ण किया था। अत: आचार्य वादिराजसूरि का समय दसवीं शती का उत्तरार्द्ध सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : आचार्य वादिराजसूरि की निम्न पाँच कृतियाँ उपलब्ध हैं—

1. पार्श्वनाथचरित : श्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें बारह सर्ग हैं। यह माणिकचन्द्र

ग्रन्थमाला से प्रकाशित हो चुका है। इसमें अनेक पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख है। कवि ने पार्श्वनाथ की प्रसिद्ध कथावस्तु को ही अपनाया है। यह कथावस्तु उत्तरपुराण में निबद्ध है। संस्कृत भाषा में स्वतन्त्र काव्यरूप में पार्श्वनाथचरित को सर्वप्रथम गुम्फित करने का श्रेय वादिराज को ही है।

2. यशोधरचरित : यशोधरचरित हिंसा का दोष और अहिंसा का प्रभाव दिखलाने के लिए बहुत लोकप्रिय काव्य रहा है। कवि वादिराज ने इसी लोकप्रिय कथानक को लेकर प्रस्तुत काव्य की रचना की है। इस काव्य में चार सर्ग हैं। यशोधरचरित की कथावस्तु यशस्तिलकचम्पू की कथावस्तु ही है। यह एक छोटा-सा खंडकाव्य है, जिसके पद्यों की संख्या 296 हैं और इसे टी. एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री ने प्रकाशित किया था।

3. एकीभावस्तोत्र : यह पच्चीस श्लोकों का सुन्दर स्तवन है, जो 'एकीभावं गत इव मया'—से प्रारम्भ हुआ है। भक्ति रस से भरा हुआ यह स्तोत्र नित्य पठनीय है।

4. न्यायविनिश्चय विवरण : अकलंकदेव ने न्यायविनिश्चय नामक तर्कग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ में 480 कारिकाएँ और तीन प्रस्ताव हैं। आचार्य वादिराजसूरि ने इस ग्रन्थ पर अपना विवरण लिखा है, जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह 20,000 श्लोक प्रमाण है और भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित है।

5. प्रमाणनिर्णय : यह प्रमाण शास्त्र का लघुकाय स्वतन्त्र ग्रन्थ है। इसमें प्रमाण, प्रत्यक्ष, परोक्ष और आगम नाम के चार अध्याय हैं। यह ग्रन्थ माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से मूलरूप में प्रकाशित हो चुका है।

6. अध्यात्माष्टक : यह आठ पद्यों का स्तोत्र है, माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से प्रकाशित है, इसमें अध्यात्म का विषय निरूपित है।